प्रावक्षण

प्रथम अध्याय : (क) साहित्य और यथार्थवाद  
(ख) लोक और लोक सन्दर्भ : अन्तः सम्बन्धों का विश्लेषण  
(ग) स्वतंत्रमोलर हिन्दी की यथार्थवादी उपन्यास परम्परा : श्रीलाल शुक्ल का राग-दरबारी  

द्वितीय अध्याय : (अ) रागदरबारी में यथार्थवाद का रूप  
1. भैयक्तक यथार्थवाद  
2. चरित्रगत यथार्थवाद  
3. संस्कारगत यथार्थवाद  
4. पारम्परिक यथार्थवाद  
5. परिवेशगत यथार्थवाद  
6. संवादगत यथार्थवाद  
7. सामाजिक यथार्थवाद  
8. भैवारिक यथार्थवाद  
9. लोकोत्तर यथार्थवाद  
(ब) रागदरबारी में लोक सन्दर्भ निरूपण :  
1. ग्रामीण लोक-सन्दर्भ  
2. कस्बाई लोक सन्दर्भ  
3. अभिव्यक्ति लोक सन्दर्भ  
(स) रागदरबारी-यथार्थ और लोक जीवन की महागाथा  

तृतीय अध्याय : (च) रागदरबारी के समग्र परिप्रेक्ष्य में श्रीलाल शुक्ल की लोकथाओं साहित्य दृष्टि एवं यथार्थवाद
(४) रागदरबारी में यथार्थवादी लोक सन्दर्भों के विचारण के
फलस्वरूप उत्पन्न व्यंग्यात्मकता के कुछ महत्वपूर्ण प्रस्ताव
9. शासन व्यवस्था विषयक प्रस्ताव
10. धार्मिक व्यवस्था विषयक प्रस्ताव
11. सामाजिक व्यवस्था विषयक प्रस्ताव
12. राजनीतिक विषयक प्रस्ताव
13. न्याय व्यवस्था विषयक प्रस्ताव
14. साहित्य विषयक प्रस्ताव
15. लोक व्यवहार विषयक प्रस्ताव
(ज) उपन्यासकार श्रीलाल शुक्ल एवं अन्तरंग साक्षात्कार
बच्चे अध्याय : (य) रागदरबारी में समकालीन युगाधिकार
(र) श्रीलाल शुक्ल के अन्य उपन्यासों में यथार्थवादी लोक
सन्दर्भों का अनुशीलन
पंचम अध्याय : यथार्थवादी लोक सन्दर्भों के समावेश के फलस्वरूप राग
(र) रागदरबारी में आगत कलिपय महत्वपूर्ण विशिष्टताओं की पहचान
1. भाषा विषयक विशिष्टता
2. विचारसूत्र एवं साहित्यिक सोदर्श्यात्मक विशिष्टता
उपसंहार
परिशिष्ट
(क) रागदरबारी में स्कृति वैभव
(ख) सन्दर्भ एवं सहायक ग्रन्थ सूची

*****